P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सांगीतिक समयी फलकों पर नवाचार ही अभिरूचि संसार

मैनेजर लाल बैरवा
वरिष्ठ शोध अध्येता,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

परिर्वतन प्रकृति का नियम है सकल सृजन परिवर्तन के फलस्वरूप है। संसार के प्रत्येक फलक मे नवाचार समाहित है इसलिए हमे प्रत्येक विधा मे इस बात को समझना जरूरी है। वक्त के साथ परिवर्तन अत्यावश्यक है हरेक नवाचार वक्तीय अभिरूचि का मनोवैज्ञानिक मनोपचार है प्रत्येक फलक में मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान होता है मनोविज्ञान ही कलाओं को परिशुद्ध एवं सौंदर्यता प्रदान करती है। जितने भी नवाचार हुए है उनका मकसद वर्तमान संदर्भ है जिसका माध्यम जीवन का सदियों से समन्वय है। वैदिक युग से वर्तमान संदर्भ में जितने भी नवाचार हुए है वो युगान्तर एवं अन्य समकालीन नवाचारों की देन है जिस प्रकार का प्रकृति और समाज का रूख रहा वैसे ही परिवर्तन नवाचारों के रूप में समकालीन मानववृत्ति का मनोवैज्ञानिक उपचार ही रहा है। अपने आस–पास के नवाचार चाहे कला पक्ष के हो या विज्ञान पक्ष के हो एक दूसरे के पूरक रहे है। और एक–दूजे को परिशुद्ध करने में महति भूमिका निभाते रहे है। इस शोध पत्र में यहि समाहित है।

मुख्य शब्द : संगीत और नवाचार, मनोविज्ञान, शास्त्रीय मर्मज्ञ, वर्तमान परिदृश्य कलाकारिय परिधान, वैज्ञानिक तकनीक, ध्वनि माध्यम विज्ञान, परिपक्व साधक इंटरनेट आडियो–वीडियो, ध्रुवपद–पर्याय आदि।

प्रस्तावना

सृजन की राहों पर किया गया नव व्यवहार नवाचार रूप में दिखाई देता है मानव और नवाचार प्रक्रियाओं, गतिविधियों का साथ युग–युगान्तर परिवेश में परिवर्तित रहा है मानव और संगीत का साथ आदिकाल से वर्तमान काल तक अनेकों रूपों में परिवर्तनशील रहा है अगर सच्चे मायने में कहा जाये तो काल की परतों में परिवर्तित संगीत का स्वरूप नवाचार का ही परिणाम है जो मार्गी एवं देशी संगीत लोक रचनाओं में परिवर्तित, परिष्कृत, गायन एवं वादन के खण्डों में परिवर्तित होता हुआ, शास्त्रीयता के बंधनों में बंधता हुआ, नवाचारात्मक स्वरूप में हमेशा परिवर्तित रहा है।

साहित्यावलोकन

महेन्द्रू नीलम वाला 2011 ने अपने शोध ''आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका '' में पाया कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में विदेशी धरती पर फ़्यूजन बहुत समय पूर्व ही शुरू हो गया था जब महज सितार वादक पण्डित रविशंकर ने विदेशों में जाकर कार्यक्रम किये और वहां के संगीतकारों के साथ मिलकर संगीत में मिश्रण का कार्य किया। इस ही प्रकार से डॉ. रामशंकर ने 2011 में "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में भाषा का स्थान" शोध में पाया कि "प्रारम्भ से ही शास्त्रीय संगीत के काव्य पक्ष का प्रमुख स्थान रहा है जैसा की बंदिश की परिभाषा है – शब्दों का वो ढाँचा या फ्रेमवर्क जिसमें कलाकार की कल्पना हो जो स्वर–ताल में बंधी हो उसे ही संगीत में बंदिश कहा गया है। इस प्रकार ही भृगुवंशी डॉ. शिखा ने 2013 में "संगीत शास्त्र एवं संगीत प्रदर्शन" के शोध में पाया कि "आधुनिक युग में मंच प्रदर्शन का बहुत महत्व है। हर कालखण्ड में संगीत का मंच प्रदर्शन हुआ है वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के ग्रंथों तथा आज के प्रमुख कलाकारों के साक्षात्कार से यही निष्कर्ष निकलता है कि कलाकार को अपने कला कौशल के स्तर को ऊँचा बनाए रखते हुए श्रोताओं का मनोरंजन करते रहना चाहिए मंच प्रदर्शन द्वारा कलाकार में वैयक्तिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर को उन्नत बनाने की क्षमता होनी चाहिए। कलाकार की यह सर्वप्रथम तथा मुख्य भूमिका है। 2013 के पश्चात् पुस्तक के रूप में कोई साहित्यावलोकन मुझे प्राप्त नहीं हुआ है।

शोध पत्र उद्देश्य

मेरे इस शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह है कि प्रत्येक शोध वर्तमान संदर्भ के लिए मनोवैज्ञानिक उपचार होता है । नवाचार मौलिक एवं शोध का अपररूप भी हो सकता है। अतः संगीत में नवाचारों को अत्यधिक प्रचारित– प्रसारित करने कि महती आवश्यकता है। संगीग ही ऐसा अकेला माध्यम है जो मानवीय सूक्ष्म तत्वों जैसे– दिल, दिमाग, मानसिक वृत्तियों, मनोभाव एवं संवेगों के लिए एक टॉनिक की भांति कार्य करता है। ये मानवीय सूक्ष्म तत्व क्रियेटिविटी ईजाद करने के उद्गम स्थल है। अतः बदलती पीढ़ी की मनोवृत्ति के नवाचारिय संगीत का हमें स्वागत करना चाहिए।

नवाचार की आवश्यकता

नवाचार की आवश्यकता सौंदर्यबोध के लिए या रोमांच पैदा करने के लिए की जाती रही है अगर ऐसे नवाचार जनहित – रोचक उपयोगी होते हैं तो काल की परतों में स्वर्णाक्षरित होते हैं अगर निरर्थक प्रतीत हुए तो समाज में अग्रप्रेषित नहीं हो पाते हैं।

वर्तमान संदर्भ में अगर नवाचार पर अपनी राय रखूं तो कहते हुए किंचित मात्र भी संकोच नहीं है कि संगीत का जो नवाचार होना था हमारे पूर्वजकाल में हो चुका है वो आये दिन सांगीतिक सृजनात्मक धराओं पर विचार विमर्श और अन्वेषण किया करते थे कैसे सात स्वर बने, कैसे श्रुति विभाजन, कैसे ग्राम–मूर्च्छना, कैसे गीतियाँ, वाणीयाँ कैसे ध्रुवपद, ख्याल, तराना, टप्पा, ठुमरी, राग आधारित समयी फलकों में नवाचारात्मक रूप में प्रवाहित हुए। ये संगीत के उन गुणीजनों का प्रसाद है जो कभी खत्म नहीं होने वाला है जो हमारे समक्ष दृष्टिव्य है। आधुनिक युग में संगीत में उतने नवाचार नहीं हो पाये मात्र रचनाओं का संकलन दिखाई देता है क्योंकि हम स्वतंत्रता की और अग्रेषित हो रहे थे जो भी सृजनात्मक नवाचार हो रहे थे, वो मनोरंजन धराओं पर आधारित थे हम शास्त्रीय बंधनों से मुक्ति चाहते थे और नये व्यवहार, प्रविधियों के माध्यम से फिल्मी संगीत रूप नवाचार का प्रतीत बनकर उभरा ये, नवाचार संगीत का इतना मनोरंजक माध्यम निकला कि इसे सभी पसंद करने लगे, इसका कारण यह था कि जिस रागदारी संगीत को सुनने में एक से दो घंटे का कार्यक्रम देखना/सुनना होता था और उस संगीत को समझने के लिए पहले शास्त्रीय संगीत की लय–ताल–स्वर व राग की जरूरी थी ये संगीत आमजनों की पहुँच से दूर था ऐसे समय में फिल्म संगीत जिसमें मात्र पांच मिनिट के गाने के माध्यम से संगीत का भाव–रूप आमजन को भावुक कर देता था ये नवाचार भी साल दर साल परिवर्तित रहा, जिसमें पहले शास्त्रीय राग व तालों का आवरण आवरित रहता था उसमें भी नवाचार हुआ और तालों में फ्यूजन से संगीत के नये–नये फ्लेवर सानने आने लगे शास्त्रीय संगीत की बंदिशों से शब्दमय साहित्य ने भी अपने प्रेम–वात्सल्य–विरह रूपों को ओढ़कर गीत, भजन, ग़ज़ल के रूपों में नवाचार की अगली कड़ी में परिवर्तित रहा तथा ये नवाचार संगीत की प्रमुख शैलियों में अपभ्रंश ही प्रतीत होता है आजकल फ़्यूजन शब्द बहुतायत प्रचार में है जिसे देखे, वो फ़्यूजन कर रहा है। ये भी नवाचार का ही प्रतीक हुए है इसमें कोई "कन्फ्यूजन" नहीं है कि ये नवाचार नहीं है। हाँ इसमें एक धारा शास्त्रीय तो दूसरी धारा देशी या विदेशी है ये दोनों धाराओं का मेचप है जिसे फ़्यूजन नाम दे दिया है।

हर कलाकार का अपना एक प्रमुख शुद्धतम कौशल होता है, चाहे वो काव्य समझ हो या स्वर समझ या ताल समझ ऐसा समझदार कलाकार अपने इस गुण को कुछ परिवर्तित कर कुछ नया कर देता है उसे नवाचार कहा जा सकता है। वर्तमान संदर्भ में कुछ व्यक्तिगत स्टाईल भी प्रचलन में आ जाती है। जैसे – फिल्म संगीत में कुमार शानु, सोनू निगम, मो. अजीज, दलेर मेंहदी, हंसराज "हंस", धनुष, हिमेश रेशमिया, मीका सिंह, हनी सिंह, अर्जित सिंह आदि अपनी स्वंय की स्टाईल के कारण प्रसिद्ध हुए हैं।

उपरोक्त कलाकारों के गायन में ऐसा क्या था कि वो नवाचार रूप में प्रसारित–प्रचारित हुआ गौर करने पर पायेंगें कि इनका गायन लीक से हटकर साहित्य का भावात्मक, लयात्मक, तालात्मक विविधता के साथ व्यक्तिगत सृजनधर्मी सोच रही है जो समाज में प्रचारित व प्रसारित है। इसी प्रकार से वर्तमानमें सूफी संगीत का आवरण नवाचार रूप लिये सूफी गानों में आलाप, रागदारी या तानदारी संगीत के माध्यम से दिखाई दे रहा है, यह भी एक प्रकार का नवाचार ही है जो आमजन को लुभा रहा है।

मेरे नजरिये में नवाचार

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जितना नवाचार संगीत क्षैत्र में होना था वो हमारे पूर्वज कलाकार, कलामर्मज्ञ, कला पारखी विद्वान, शास्त्रकार, ध्वनिमर्मज्ञ कर गये सच्चे मायने में वो ही नवाचार हुए हैं जिन्होंने स्वर, भाव, ताल, लयकारी, रागदारी, राग–विज्ञानी माध्यम से राग बनाये व आमजन तक पहुँचाये, हम वर्तमान में कुछ नवाचार नहीं कर रहे हैं। हम खुश हो सकते हैं कि नवाचार कर रहे हैं जबकि हकीकत है कि हम पुस्तैनी रूपों में अपभ्रंश कर रहे हैं और ढिंढोरा पीट रहे हैं नवाचार का, वाह रे कलयुगी मानव, अगर समझ रखता है तो समझदार है तो कोई बिलकुल नया राग, नया संगीत, नया थाट, नया वाद्ययंत्र का निर्माण करके दिखाओ, अगर ऐसा कहीं हो रहा है तो वो नवाचार की श्रेणी में आयेगा।

अगर मुझसे संगीत में नवाचार की परिभाषा पूँछी जाये तो कहुँगा–वर्तमान में हम जितना भी संगीत सुनते हैं वो चाहे देशिक हो आंचलिक हो या विदेशिक हो प्रारम्भ में वो सभी नवाचार का ही रूप बनकर प्रचलित हुए लेकिन वर्तमान रूप भूत काल प्रक्रियाबद्ध एवं शैलीबद्ध हो गया, जिसके कारण नवाचारात्मक संगीत ने फिर जन्म लिया और ये प्रक्रियाएँ, प्रविधियाँ, या सृजनात्मक कार्य भी नवाचार कहलाती रही है।

ट्रायटेन के अनुसार – शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता वरन इन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सके।

संगीत और नवाचार वर्तमान संदर्भ में

शास्त्रीय संगीत परम्परा निर्वहन के साथ ही संगीत के महासागर का संरचनात्मक ढांचात्मक स्वरूप है जिस प्रकार एक चित्र में स्क्रैच का महत्व होता है उसके बिना किसी चित्र की आधारीय कल्पना मुश्किल है वैसे ही शास्त्रीय संगीत–शिक्षा का बिना संगीत प्रशिक्षण ज्ञान होना मुश्किल है। ये वो स्केलटन (ढांचा) है जिसमें सम्पूर्ण रचनाऐं समाहित हो सकती है। शास्त्रीय संगीत की धारा युगों से एक ही परिपाटी पर चली आ रही है इस धारा में गायन–शिक्षण विधिवत तरीके से प्रचलित है अतः वर्तमान तकनीक प्रभावित संदर्भ में संगीत की शिक्षण–प्रशिक्षण धाराओं में विद्यार्थियों की अरूचि उत्पन्न हो रही है या कौशल का व्यापक स्वरूप ग्रहण नहीं हो पा रहा है इसक कारण शिक्षण–प्रशिक्षण धारा में नवीन आयामों, गतिविधियों, सृजनात्मक व नवाचारीय धरातलों पर पायी गई भारी कमी है, शिक्षक का न्वोन्मेंषशाली नहीं होना और शिक्षण में नवाचारात्मकता का अभाव होना है आज ऐसे विरले ही शिक्षक होंगें जो विद्यार्थियों में सृजनात्मक गुण के प्रति नजरिया बनाये, विद्यार्थियों को नवाचारात्मक संगीत पर व्याख्यान या प्रदर्शन से रूबरू कराये, वर्तमान में शिक्षा में सुधार हुआ है और इस बात को संगीत के पुरोधा संगीतज्ञ, वाग्गेयकार, कलाकार भी स्वीकार कर रहे हैं व ऐसे अभिनव प्रयासों के माध्यम से सांगीतिक कौशल में अभिरूचि व अभिवर्द्धन कर सहयोग कर रहे हैं पौराणिक मान्यताओं से प्रवाहित सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार व शैलीगत शिक्षण प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं और साथ ही वर्तमान यूथ को नजरमय रखते हुए नवाचारात्मक धरातलीय प्रयोग स्वीकार कर ऐसे प्रयोगों के प्रति शोधवर्ग, शिक्षकवर्ग व विद्यार्थीवर्ग में प्रचार–प्रसार व अभिरूचि विन्यास स्थापित कर रहे है। ये वर्तमान धरातलों पर एक सुगम पहल है जिसे हर विशेष वर्ग को स्वीकार करना चाहिए एवं अपना नजरिया विकसित व व्यापक स्तरीय बनाना चाहिए।

संगीत में हो रहे वर्तमान में नवाचार

संगीत की विभिन्न शैलियो में अपभ्रंश माध्यम से या मिश्रित माध्यम से नवाचार के स्वरूप आये दिन दिखाई–सुनाई दे रहे हैं हमें इस बात को स्वीकार करना ही पडेगा कि आज से पिछले दशकों में प्रस्तुतीकरण का तरीका व लोगों की अभिरूचि विभिन्न रही है। जैसे कुछ पिछले दशकों में शिक्षार्थी वर्ग राग के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान लेने के लिए लालायित रहता था वो समझता था कि जो स्वरूप है उसमें नायक की भूमिका अदा करनी है लेकिन वर्तमान संदर्भ में तो सिर्फ राग चलन, पकड़ समझ आ जाये कुछ अपाल, तानें रट ले या तान प्रक्रिया आ जाये तो सांगीतिक रचनाओं में कुछ तानबाजी करके लोगों में चमत्कार दिखाया जाये, ऐसे नवाचार आये दिन हमें फिल्म संगीत में भी दिखाई दे रहे हैं। सूफी नगमों में आलाप या तान प्रकारीय माध्यम से अपनी शास्त्रीयता समझ को दिखाया जा रहा है ऐसे सृजनात्मक व नवाचारात्म्क प्रयास आमजन में शास्त्रीयता के बीजारोपण का कार्य कर रहे हैं। इसी संदर्भ में मैं जिक्र करना चाहुँगा की ऐसे कई गाने जो फिल्म शैली के रहे हैं जिन्होंने रागदारी स्वरूप को आमजन तक पहुँचाने का प्रयास किया है और शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिरूचि विकसित की गई है जिसमें स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, आशा जी, रफी साहब, किशोर कुमार, अनुप जलोटा, मेंहदी हसन साहब, जगजीत सिंह, गुलाम अली, नुसरत फतेह अली खान आदि ने ऐसी अनेकों नवाचारित रचनाओं का पार्श्व गायन माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जो आज भी हमें लगता है कि इनका ये नवाचार स्वरूप हमें आज भी पथ–प्रदर्शन, अभिरूचि व कौशल अभिवर्द्धन में सहायक होता हैं। संगीत की उपरोक्त महान दिव्यात्मक हस्तियां जिन्होंने हमारा सांगीतिक विश्वस्तरीय धरोहर में अपनी भूमिका निभाई है, एवं शास्त्रीयता का दीपक अपने अंदाज में जीवंत रखा है वो एक समय के फलकों पर अवलम्बित रहा है उसके बाद समाज के बदलते स्वरूप में ढलते हुए नये फनकारों ने अपने–अपने अंदाज में संगीत में नवाचार किये जो दशकीय धाराओं में जन–मन रंजन का कार्य करते रहे हैं।

ध्रुपपद की पर्याय एक मात्र महिला ध्रुवपद गायिका डॉ. मधुभट्ट "तैलंग" और नवाचार

राजस्थान के ध्रुवपदाचार्य, कलावंत, वाग्गेयकार पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग की सुपुत्री डॉ. मधुभट्ट तैलंग विशुद्ध ध्रुवपद गायिका ध्रुवपद की संवर्द्धक, सम्प्रेषक, व एक उम्दा वाग्गेयकार पिता की उम्दा वाग्येकार व कलावंतिका है जो हमारे राजस्थान का गौरव भी है वर्तमान में राजस्थान विश्वविद्यालय की ललित कला आधिष्ठाता व संगीत विभाग की अध्यक्ष के साथ मेरी गुरु माँ व शोध निर्देशिका भी है। इनकी सृजन क्षमता का आकलन कर पाना नामुमकिन है जैसा मुझे महसूस हुआ कि इनकी सृजनधर्मिता सैंकड़ों सृजनकर्ताओं से कई गुनी है और इनके द्वारा विद्यार्थियों में अभिरूचि व कौशल अभिवर्द्धन के लिए किये गये अनगिनत नवाचार दिखाई देते हैं एक ही कार्यक्रम में सभी स्तर (बाल वर्ग – शोधवर्ग) के लिए ऐसी कई रचनायें मिल जायेंगी जो नवाचारीय धरातलों पर रचित व स्वरबद्ध की हुई होती है। हर वर्ष "इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट व संगीत रसमंजरी केन्द्र, जयपुर" जो इनके पिताश्री द्वारा स्थापित संस्था है, इनमें ऐसे नवाचार वर्षों से निरंतर होते आ रहे हैं, जबकि ऐसे नवाचार वर्तमान संदर्भ में ध्रुवपद की गरिमा बनाये रखने एवं ध्रुवपद का सरलीकरण माध्यम से आमजन में प्रचारित–प्रसारित, शिक्षण – प्रशिक्षण का मनोवैज्ञानीय स्तर बनाये रखने के माध्यम से किये जा रहे हैं आज ध्रुवपद के बारे में भ्रांतियां प्रचारित है कि ये शैली क्लिष्ट है इनका साहित्य अरोचक, लयकारियां कठिन है, गला सूखा हो जाता है, गले का सौंदर्य खत्म हो जाता है, ऐसी ही अनगिनत भ्रांतियां वर्तमान संदर्भ में प्रचारित है जो सच्चे मायने में ठीक नहीं है।

इन सभी भ्रांतियों को मिटाने के लिए पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग जी, व डॉ. मधु भट्ट तैलंग जी वर्तमान संदर्भित रचनाओं में सृजनात्मक नवोन्मेष प्रयोग किये व बाल–वर्ग, विद्यार्थी–वर्ग, शोधार्थी–वर्ग व आम–खास समारोहों में इन नवाचारों का सम्प्रेषण कार्यशाला, सेमीनार, कोन्फ्रेन्स एवं सांगीतिक मंचीय कार्यक्रमों, दूरदर्शन–आकाशवाणी व कई प्रमाणिक जर्नलों व पत्र–पत्रिकाओं व स्वकीय कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार–प्रसार किये हैं।

जैसा मुझे लगता है कि गुरु माँ द्वारा व बाबुजी द्वारा सृजित मौलिक नवाचार विद्यार्थियों में संगीतिक अभिरूचि, कौशल अभिवर्द्धन के लिए महत्वपूर्ण सृजनात्मक व गुणात्मक नवाचार है ऐसे प्रयास अगर सभी गुणीजन, कलाकार व संस्थागत स्तर पर किये जाये व प्रचारित–प्रसारित हो तो शास्त्रीय संगीत शिक्षण में कौशल अभिवृद्धि होगी जो हमारी शिक्षण–प्रणाली का प्रमुख ध्येय होता है।

इन्टरनेट एवं ऑडियो–वीडियो माध्यम से नवाचार

ऐसे ही नवीन नवाचार आये दिन संगीत पुरोधाओं द्वारा आये दिन यू–ट्यूब माध्यम व टेलीविजन के चैनलों पर प्रदर्शित होते नजर आते हैं संगीत की महानतम हस्तियों ने भी ऐसे कई नवाचार किये हैं जो घरानेगत बंदिशों से परे सृजनात्मक धरातलों पर अवलम्बित है ऐसे कई वीडियो देखने को मिल जायेंगें जो दो शैलियों में समिश्रण माध्यम से तैयार नवकल्पित नवाचार प्रचारित–प्रसारित किये जा रहे है जिनका ध्येय मात्र मनोरंजन नहीं है साथ ही अपनी शैलीगत पहचान भी आमजन तक सम्प्रेषित करना है ये नवाचारात्मक प्रयोग वर्तमान संदर्भ में अधिगम की नवाचारीय मांग है जिससे कौशल में सम्पूर्णता लाई जा सके।

शास्त्रीय मर्मज्ञों द्वारा नवाचार पहल

ऐसे नवाचार संगीतिक वादन शैलियों में भी किये जा रहे हैं व होते रहे हैं तबला वादक में पं. किशन महाराज, उस्ताद जाकिर हुसैन व सितार वादन में पं. निखिल बनर्जी, नृत्य में पं. बिरजू महाराज, ध्रुवपद में पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग व उनकी सुपुत्री डॉ. मधु भट्ट तैलंग, शिक्षण में बृजचन्द्र व नवीन वाद्य रचना व फ्यूजन में पं. विश्व मोहन भट्ट व उनके सुपुत्र सलिल भट्ट ने ऐसे नवाचार हमारे सम्मुख रखें है व अनगिनत नवीन सृजनात्मक नवाचार शास्त्रीय संगीत में आये दिन प्रयोग हो रहें हैं इन प्रयोगों का धैय अभिरूचि एवं कौशल अभिवर्द्धन करना है।

आंचलिक नवाचारों का उदाहरण डी.जे. साउण्ड ले लीजिए ऐसे लोकगीत जो कुछ दशक पूर्व ग्रामीण आंचलों में व विशेष समुदाय वर्ग में ही प्रचारित–प्रसारित थे व जाति विशेष की पहचान व प्रादेशिक पहचान थे, लेकिन नई रिकॉर्डिंग–तकनीकों ने इन्हें हिन्दुस्तान के हर स्थान पर पहुँचा दिया जिसकी कल्पना निर्माता, निर्देशक सोच भी नहीं सकते आज हरियाणवी लोकशैली रागिणी कुछ समय पूर्व हरियाणवी अंचल में प्रचलित थी लेकिन जब "चन्द्रावल" फिल्म में रागिनी उपयोग की गई तो विश्वव्यापी पहचान बनी ऐसे ही हमारी मांड गायिकी के केसरिया बालम विश्वव्यापी पहचान बना, इसी प्रकार हमें प्रतीत होता है कि तकनीकों ने हमेशा परिवर्तन किया है, लेकिन एक हद तक ये परिवर्तन जिन्हें नवाचार कह रहे हैं शोभा देगें बाद में ऐसा ना हो जाये कि आज हरियाणवी रागिनी का नव प्रचारित स्वरूप दिखाई दे रहा है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है लेकिन एक हद तक सौन्दर्य की चरम सीमा तक जरूरी है ऐसा ना हो कि सौन्दर्य बोध का ह्रास हो जाये।

परिपक्व साधक ही करे नवाचार

जैसे किसी दुल्हन का श्रृंगार इतना कर दिया जाये कि वो हास्यास्पद रूप ले ले, ऐसा सृजन किसी काम का नहीं जो दुल्हन के परिवेश–भेषभूषा को असौन्दर्यात्मक व नारीत्व पक्ष के विमुख हो जाये, ऐसा तभी होगा जब श्रृंगारकर्ता अकुशलकार होंगें, जिन्हें सृजन के मायने पता नहीं होंगें, पूर्व ज्ञान के अभावी होंगें ऐसे हाथों से किया गया नवाचार हमेशा हास्यास्पद रूप ले लेगा। अतः कहा जा सकता है कि नवाचारात्मक प्रयोग कुशल व सक्षम हाथों में होना अति आवश्यक है ऐसे नवाचार आमजन में अभिरूचि व कौशल का पुष्टिवर्धन करते हैं साथ ही नवीन परिवेश व आनंद अभिव्यक्ति देते हैं।

सच्चे मायने में नवाचार का भाव सहृदयात्मक मनों में भाव जागृत करना ही होता है। नवीन माहौल पैदा करना, नवीन नजरिया, नवोन्मेषी तकनीक, नवीन व्यवहार जो रोचक हो, आनंददायक हो, गागर में सागर समाहित लोकोक्ति आधारित हो, ऐसे सृजन कार्य व नवाचार ही समाज को नयी दिशा, नयी राह व पाश्चात्य शैली के साथ तारत्मय बैठाने के तरीके हैं। अतः ऐसे प्रयास हर कुशल सांगीतिक वर्ग को करने चाहिए ताकि समय की नवाचारत्मक रेत पर अपने निशान छोड़ सके।

ध्वनि माध्यम, चिकित्सा और संगीत नवाचार

नवाचार और संगीत का दामन हर विषय ने व भाषाओं ने अपनी ही तरह से आवर्णित किया है जिस ध्वनि विज्ञान के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र में उपकरणीय परीक्षण किये जाते है वो मानवीय आंतरिक अंगों का महज परीक्षण है, लेकिन नाद का शुद्धतम संगीतमय स्वरूप मनोभावों को जागृत करने एवं मनोचिकित्सा में उपयोगी है, उस प्रकार से उस सांगीतिक रचनाओं का चिकित्सा क्षेत्र में परीक्षण किये जा रहे हैं ये भी एक प्रकार का नवाचार है कि एक गिटार वादक का मस्तिष्क का ऑपरेशन किया गया उसका ब्रेन को खोल कर ऑपरेशन हुआ, और वो बिना रूके गिटार बजाता रहा, ऐसे कई नवाचारात्मक प्रयोग देखने को मिलते हैं।

मानसिक रोगों के उपचार हेतु किये गये सांगीतिक प्रयोग अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए है। मूर्घन्य मनोरोग चिक्तिसक पीटर न्यूमेन और माइकन सेंडर्स ने ऐसा मनोरोग चिकित्सालय प्रारम्भ किया जिसमें संगीत से उपचार किया जाता था।[1]

संगीत के माध्यम से चिकित्सा करना एक अभिनव नवाचार कहा जा सकता है कई शीर्ष श्रेणी के चिकित्सक भी मानते हैं कि अमुख धुन या राग को सुनते हुए आपरेशन करने में एकाग्रता रहती है या रोगी की मानसिक हालत में सुधार किया जा सकता है ऐसे नवाचारात्मक प्रयोग हमारे देश भारत में भी हो रहे हैं।

वैज्ञानिक तकनीक एवं नवाचार

"वैज्ञानिकता ने जहाँ एक और मनुष्य के जीवन के सम्भावित सामान्य पक्षों को प्रभावित किया वहीं भारतीय संगीत एंव कला भी उसके प्रभाव अधूती न रही कारण संगीत का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ संगीत के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रभाव के कारण प्रचार प्रसार के साधन मुद्रण प्रणाली की सुविधा अनेक वैज्ञानिक उपकरण जैसे ग्रामोफोन, माइक्रोफोन (ओडियो एम्पलीफायर) आकाशवाणी, कैसेट्स, टेपरिकार्डर, टेलिविजन, वीडियो, सिन्थेसाइजर और कॉम्पैक्ट डिस्क आदि के सम्मिलन से

संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों को समृद्ध बनाने में अत्यंत सहयोग मिला जिसमें संगीत की शिक्षा–प्रदर्शन सभी कुछ प्रभावित हुए तथा संगीत कला घरानों से निकलकर जनसाधारण तक पहुँची।[2]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 20वीं शताब्दी में संगीत में जो परिवर्तन हुए वो वैज्ञानिक उपकरणों के नवाचार के कारण हुए और वर्तमान संदर्भ में देख जाये तो मोबाईल क्रांति व जीयो की इंटरनेट क्रांति से भी संगीत में नवाचार हो रहे हैं आज कोई भी कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग बनाकर इन्टरनेट पर डाल सकता है, डाउनलोड कर सकता है तथा अपनी मन–पसंद राग सेव कर सकता है। अपना यू–ट्यूब चैनल बना सकता है अपने ऑडियो–वीडियो, फेसबुक पर भेज सकता है यह तकनीकी परिवर्तन शास्त्रीय संगीत व संगीत की धाराओं के प्रति अभिरूचि व कौशल अभिवृद्धि का नवाचारात्मक स्वरूप ही तो है। जो परिवर्तन की नवाचारात्मक बयार बनकर प्रवाहित हो रही है।

कलाकारिय परिधान एवं मंचीय सज्जा में नवाचार

मंचीय सज्जा में आये परिवर्तन स्वरूप नवाचार भी संगीत में अभिरूचि विकसित करते हैं सुसज्जित स्टेज, लाईट डेकोरेशन, मनोरम बैनर भी अभिरूचि विकसित करते कलाकार का फैशनेबल लुक परिधान भी समय की नवाचारात्मक मांग है।

"आधुनिक युग में मंच प्रदर्शन का बहुत महत्व है। हर कालखण्ड में संगीत का मंच प्रदर्शन हुआ है वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के ग्रंथों तथा आज के प्रमुख कलाकारों के साक्षात्कार से यही निष्कर्ष निकलता है कि कलाकार को अपने कला कौशल के स्तर को ऊँचा बनाए रखते हुए श्रोताओं का मनोरंजन करते रहना चाहिए मंच प्रदर्शन द्वारा कलाकार में वैयक्तिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर को उन्नत बनाने की क्षमता होनी चाहिए। कलाकार की यह सर्वप्रथम तथा मुख्य भूमिका है।"[3]

अतः संगीत प्रदर्शन में नवीन तकनीकों वर्तमान संदर्भित पहनावों में आये आमूलचूल नवाचारों का ध्यान रखकर कार्य करना वर्तमान की मांग है।

"संगीत के दो मुख्य उद्देश्य होते हैं–

1. जनरूचि के आधार पर मनोरंजन करने वाला होता है।
2. अदृश्यफल देने वाला, धर्म, अध्यात्म आत्मिक विकास वाला होता है।[4]

हमें इन उद्देश्यों पर ध्यान देना होगा साथ ही इस तन में समाहित एकत्व ईश जिसे परमेश्वर, परमपिता माना है धार्मिक मनोभावों व मनोवृत्तियों से परे की सोच रखकर नवाचारात्मक प्रयोगों को अपनाना होगा।

शास्त्रीय संगीत में बंदिश निर्माण हो या किसी रचना को रागलेपित कर नवीन नवाचारात्मक बनाने को लेकर अवश्य ध्यान देना चाहिए कि रचना के शब्दों के अनूरूप बंदिश का निर्माण है या नहीं ऐसा कई गुणीजनों ने भी स्वीकारा है "प्रो. देवव्रत चौधरी के अनुसार "बंदिश में एक बंधन का अर्थ समाया हुआ है जैसे सामाजिक एवं सांसारिक बंधन है यह लय–ताल के दायरे और राग नियमों में बंधी रहती है।"[5]

हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है हमें प्रयोगात्मक नवाचार की स्वतंत्रता है इसका तात्पर्य ये नहीं है कि हमारे नवाचार हमारी सभ्यता और संस्कृति के ह्यास के कारक बने ऐसा कहा भी गया है कि "संस्कृति सभ्यता के जन्म की प्रथम सीढी है। मनुष्य द्वारा स्वंय के अस्तित्व को सुरक्षित रखने की व्यग्रता इसके लिए मुनष्य ने सदैव ही विभिन्न उपयोगी कार्य व खोजे की है"[6] अतः संगीत में हो रहे उन ही नवाचारों को ग्रहण व अग्रेसित करना हमारा परम ध्येय होना चाहिए जिससे हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का उन्न्यन हो सके।

शास्त्रीय संगीत में नवाचार करते समय राग व साहित्य का उच्च स्तरीय होना अति आवश्यक है अतः ऐसे नवाचार नहीं किये जाने चाहिए या अग्रेसित नहीं होने चाहिए जिनमें साहित्य का स्तर उच्च नहीं हो। "प्रारम्भ से ही शास्त्रीय संगीत के काव्य पक्ष का प्रमुख स्थान रहा है जैसा की बंदिश की परिभाषा है – शब्दों का वो ढाँचा या फ्रेमवर्क जिसमें कलाकार की कल्पना हो जो स्वर–ताल में बंधी हो उसे ही संगीत में बंदिश कहा गया है।"[7]

अतः ऐसे नवाचार जो राग के प्रमुख अंगों को निर्वहन नहीं करते हैं उनका प्रचार प्रसार उचित नहीं हो।

"भारतीय संगीत का सुसंस्कृत रूप वैदिक युग से लेकर आज तक अनेक परिवर्तनों के माध्यम से गुजरा है। संगीत में बदलाव का आरम्भ तो हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही हो चुका है। संगीत वाद्य–नृत्य एवं गीत संगीत की बदलती शैली हमारे संगीत के इतिहास में निहित है।[8] भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपार कल्पना विन्यास या अनंत कल्पना क्षमता है जो हमारी धरोहर है सभ्यता एवं संस्कृति है लेकिन समय–समय पर विदेशी धरती पर फ्यूजन हुआ है।

विदेशी स्तर पर नवाचार

"भारतीय शास्त्रीय संगीत में विदेशी धरती पर फ़्यूजन बहुत समय पूर्व ही शुरू हो गया था जब महज सितार वादक पण्डित रविशंकर ने विदेशों में जाकर कार्यक्रम किये और वहां के संगीतकारों के साथ मिलकर संगीत में मिश्रण (Blending) का कार्य किया।[9]

निष्कर्ष

मेरे शोध पत्र का यही निष्कर्ष निकलता है कि हमें नवाचारात्मक प्रयोगों का पक्षधर होना चाहिए। जैसा कि मेरा राजस्थान विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में चल रहा शोधकार्य का शीर्षक "भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षण में अभिरूचि एवं कौशल अभिवर्द्धन हेतु सृजनात्मक अभिनव प्रयोग" है इसलिए भी नवाचारीय धाराओं का में पक्षधर हूँ ताकि संगीत का मनोविज्ञानीय स्तर पर शिक्षण–प्रशिक्षण हो एवं नचारों के सौंदर्य को आम विद्यार्थी ग्रहण करे, क्योंकि संगीत में हुए नवाचार अभिरूचि एवं कौशल अभिवृर्द्धन में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि सांगीतिक समयी फलकों पर नवाचार ही अभिरूचि संसार होता है ।

संदर्भ सूची

1. *पारीक डॉ. सोनिका "भारतीय संगीत द्वारा चिकित्सा" राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, पृष्ठ सं. 45, संकरण – 2011*

2. *गौतम अनिता "भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ – (प्राक्कथन), संस्करण 2008*
3. *भृगुवंशी डॉ. शिखा – "संगीत शास्त्र एवं संगीत प्रदर्शन" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 309, संस्करण 2013*
4. *ऋषितोष डॉ. कुमार – "संगीत के विविध आयाम", कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 27, संस्करण 2010*
5. *पंत डॉ. शिप्रा "राग शास्त्र में पारम्परिक बंदिशों की भूमिका" अंकित पब्लिकेशन्स मॉडल टाउन, दिल्ली, पृ. सं. 20, संस्करण 2011*
6. *मित्तल अंजली "भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 07, संस्करण 2003*
7. *डॉ. रामशंकर "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में भाषा का स्थान" – संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृं.सं. 11, संस्करण 2011*
8. *बनर्जी डॉ. असित कुमार "हिन्दुस्तानी संगीत परिवर्तनशीलता (भूमिका), पृं. सं. 1*
9. *महेन्द्रू नीलम वाला आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 236, संस्करण 2011*